VOL- VIII ISSUE- VII JULY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

हिंदी सिनेमा और भारतीय मुसलमान
('मुल्क' फिल्म के संदर्भ में)

शेख उस्मान सत्तारमियाँ
हिंदी विभाग (शोधार्थी)
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद,

सिनेमा महज समाज का दर्पण नहीं है, न ही वह जीवन की आलोचना है, सिनेमा का महत्त्व आज के संदर्भ में कहीं अधिक बढ़ गया | सिनेमा ने मनुष्य के मनोवैज्ञानिकता को अपने अनुसार ढालना सिख लिया है | आज के समय में 'सिनेमा' को अलग रखकर समाज को नहीं देखा जा सकता | इसी कारण सिनेमा में समाज को देखना एवं सिनेमा का समाजशास्त्रिय अध्ययन करना आज के समय की मांग है | सिनेमा का अस्तित्व समाज से है और समाज पर सिनेमा का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई देता है | भारत में अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में सिख, फारसी, बौद्ध, जैन, ईसाई एवं मुस्लिम समाज की गणना की जाती है | आज भी इस मान्यता को हवा-पानी दिया जा रहा है कि समाज में अस्थिरता पैदा करने का कार्य केवल मुस्लिम समाज द्वारा किया जाता है | उन्हें बार-बार बदनाम करने की साजिश की जा रही है, उनपर सभ्य समाज द्वारा 'आतंकवाद' का धब्बा लगाया गया | भारतीय मीडिया द्वारा हमेशा यह प्रचारित किया जाता रहा है कि सभी देशविरोधी कार्यों का जिम्मेदार केवल मुसलमान ही है | आए दिन मीडिया के माध्यम से एक समुदाय विशेष लोगों की छवि को बिगाड़ने का कार्य किया जाता रहा है, इसी का परिणाम यह हुआ है कि आज अमेजोन के डिलीवरी बॉय से खाना इसीलिए नहीं लिया गया कि वह (खाना लेकर आने वाला लड़का) मुसलमान था | हमने यह भी देखा है कि कोरोना काल में सब्जीवाले से जाति-धर्म पूछकर ही सब्जी खरेदी जा रही थी | साहित्य के भांति सिनेमा ने अपने युग की सचाइयों का वर्णन बखूबी किया जाता है | समाज क्या सोच रहा है और समाज को क्या चाहिए इसका ध्यान सिनेमा के अंतर्गत रखा जाता है, समाज के बदलते स्वरूप के अनुसार सिनेमा के भी विषयवस्तु में बदलाव दिखाई देता है |

हिंदी सिनेमा में शुरूआती दौर में मूक फ़िल्मों का प्रचलन अधिक था, प्रारंभिक समय में पारसी नाटक कंपनी के दर्शक सिनेमा के दर्शक के रूप में परिवर्तित होने लगे | भारत की पहली बोलती फ़िल्म का दर्जा 'आलमआरा' को दिया गया | इस फ़िल्म के प्रदर्शन के पश्चात फ़िल्मों में मुख्य रूप से संवाद को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा | अब फ़िल्में समाज के यथार्थ को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत कर रही थी | समाज में प्रचलित अनेक भ्रांत धारणाओं को सिनेमा ने व्यक्त किया | हिंदी सिनेमा भारतीय मुसलमान के अंतर्मन को उजागर करने में खरा उतरा है और साथ ही साथ अनेक ऐसी धारणाओं को उत्पन्न भी किया है जो मुस्लिम समाज में प्रचलित नहीं है | आज़ादी के पश्चात हिंदी सिनेमा ने हिन्दू-मुस्लिम संबंधों पर अधिक जोर दिया, दर्जनों ऐसी फ़िल्मों का निर्माण किया गया जिसका संबंध ऐतिहासिक चरित्रों से हैं जिसमें प्रमुख फ़िल्में हैं- 'मुगले-आजम', 'हुमायूँ', 'जोधा-अकबर', 'शतरंज के खिलाडी', 'लाल किला' आदि विभाजन के पश्चात देश में अनेक ऐसी घटनाएँ हुई जिसका सीधा असर समाज पर पड़ रहा था जिसमें प्रमुख घटनाएँ थी- बाबरी मस्जिद का कारसेवकों द्वारा ढहाया जाना | बाबरी मस्जिद के ढहने के बाद मुस्लिम समाज में असंतोष की भावना पनपने लगी | देश में जगह-जगह सांप्रदायिक दंगों ने अपनी जगह बना ली थी | बाबरी मस्जिद के विध्वंस को केंद्र में रखकर सईद अख्तर मिर्जा के निर्देशन में 'नसीम' फ़िल्म का निर्माण किया | देश एवं वैश्विक स्तर की राजनीती एवं घटनाओं का असर कहीं-न-कहीं भारतीय मुसलमान की छवि को समझने में हमारी मदत करती है | जब आम मुसलमान जो हिन्दू समाज की तरह खेतों में काम करता था, रोजमर्रा के जीवन में वह भूख से लढ रहा था उसका चित्रण 'आसमान महल' के माध्यम से किया गया था | 'गरम हवा'

सन् 1973 के माध्यम से विभाजन की त्रासदी के साथ-साथ इस बात पर जोर दिया गया कि मुसलमान भी हिन्दू समाज की तरह भारत में रहना चाहते हैं | हिंदी सिनेमा में आम मुस्लिम मन का उल्लेख 'दस्तक', 'नसीम', 'सलीम लंगड़े पर मत रो', 'मम्मो', 'कुली', 'चक दे इंडिया', 'न्यूयार्क', 'माय नेम इज खान', 'सीक्रेट सुपरस्टार', 'लिपिस्टिक अंडर माई बुर्का', 'देहक', 'बोल' एवं 'मुल्क' आदि फिल्मों में हुआ है | इन फिल्मों की विशिष्टता यह थी कि इन फिल्मों में उस आम मुसलमान का वर्णन किया गया जिसे हम रोजमर्रा के जीवन में आसपडोस में देखते हैं | करण जौहर द्वारा निर्देशित 'माय नेम इज खान' फ़िल्म में एक मुसलमान होने की जिद्दोजहद का वर्णन किया गया है | अमेरिका पर 9/11 के आतंकवादी हमले के पश्चात दुनिया की सोच मुसलामनों के प्रति बदल ही गई थी, इसी बदलते स्वरूप के कारण मुस्लिम समाज पर आतंकवादी अथवा जिहादी का ठप्पा लगा दिया गया | 'मुल्क' फ़िल्म यह दर्शाती है कि प्रत्येक मुसलमान आतंकवादी नहीं होता और बुराई चाहे कितनी भी बड़ी हो वह सच के सामने कमजोर पड़ ही जाती है |

'मुल्क' यह उर्दू भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ 'देश' है | इस फिल्म के निर्देशक श्री. अनुभव सिन्हा है | यह फिल्म 2018 में रिलीज हुई थी, इस फिल्म में उस मानसिकता का विरोध किया गया जिनका मानना था कि भारतीय मुसलमान आतंकवादी, देशद्रोही एवं विश्वासघाती होते हैं | यह फ़िल्म बनारस एवं लखनऊ नगर के इर्द-गिर्द घुमती हुई दिखाई देती है इसी कारण बनारस का संपूर्ण परिवेश इस फिल्म में चित्रित होता है | इस फिल्म में उस देशभक्त मुस्लिम परिवार की कहानी है जिसने सन् 1947 ई. में पाकिस्तान के बजाय मुल्क का चयन किया | स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज में मुसलमानों के विरुद्ध अनेक भ्रांत धारणाओं को जन्म दिया गया जैसे मुसलमान कट्टर होते हैं, मुसलमान धोकेबाज होते हैं, देशभक्त नहीं होते, मुसलमान नहाते नहीं हैं अर्थात गंदगी परस्त होते हैं, मुसलमानों के लिए इस्लाम पहले और वतन बाद में आता है, मुसलमान अनेक शादियाँ करते हैं और उनके दस-दस बच्चे होते हैं, मुसलमान आतंकवादी होते हैं, आँखों में सुरमा और कंधे पर मुसलमानी गमछा रखते हैं आदि अनेक लोक-प्रचलित धारणाओं को हवा-पानी दिया गया | आज भारत में अधिकांश मुसलमान प्रगतिशील दृष्टिकोण को स्वीकार कर चुके हैं, लेकिन हिंदी सिनेमा के भीतर मुसलमान की छवि अधिक भिन्न दिखाई देती है | लोक में प्रचलित उपर्युक्त धारणाओं को 'मुल्क' में नए तरीके से चित्रित किया गया है, इसीलिए यह फ़िल्म अपने-आप में बेजोड़ है |

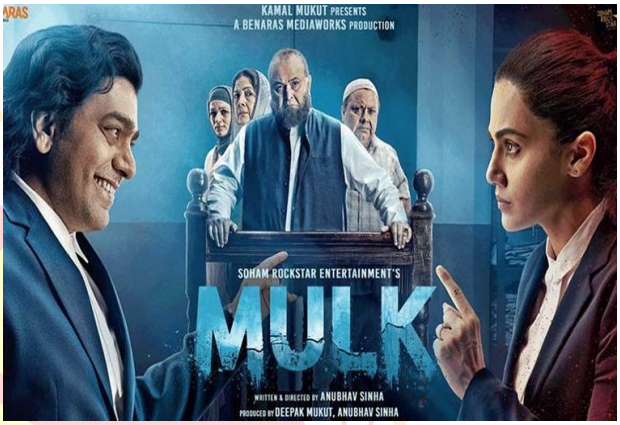

इस फिल्म के नायक मुराद अली मोहम्मद (ऋषि कपूर) जो पेशे से वकील है, इसी कारण वह अपने समाज एवं आस-पड़ोस में इज्जत से जीवन जीते है | उनके प्रत्येक त्योहारों में आस पड़ोस के लोग अपने-आप सहज रूप से शिरकत करते हैं | मोहम्मद जी को हिन्दू समाज एवं उनकी वैचारिकता से कोई परहेज नहीं था, न आस-पड़ोस के हिन्दू समाज से न कोई दिक्कत थी | मुराद अली मोहम्मद के इसी प्रकार के साझा संस्कृति का परिणाम यह है कि अपने बेटे के लिए बहू के रूप में हिन्दू समाज की आरती मोहम्मद (तापसी पन्नू) को स्वीकार कर लेते है | उनका परिवार संयुक्त परिवार होने के कारण सभी एक-दुसरे के सुख- दुःख को साथ मिलकर निपटाते हैं | 'मुल्क' फ़िल्म में मोड़ तब आता है, जब मोहम्मद के भाई बिलाल मोहम्मद (मनोज पाहवा) का बेटा कुछ आतंकवादियों की साजिश में आकर देश विरोधी गतिविधियों में भाग लेता है | जिसके परिणाम स्वरूप एक बस को निशाना बनाया जाता है, और उसमें तक़रीबन 16 लोगों की मृत्यु हो जाती है |

लोकतांत्रिक व्यवस्था की खूबसूरती इस बात में है कि जब एक मुस्लिम युवक द्वारा इस फ़िल्म में सम्पूर्ण बस को साजिश के तहत बम ब्लास्ट से उड़ाया जाता है तब उस केस की जिम्मेदारी एक मुस्लिम अधिकारी को दी जाती है जिसका नाम दानिश जावेद (रजत कपूर) है | दानिश जावेद अगर चाहते

तो शाहिद मोहम्मद (प्रतीक बब्बर) को गिरफ्तार कर सकते थे, लेकिन उन्होंने गोली मार कर उसका इनकाउंटर कर दिया | यहाँ 'न्यूयार्क' फ़िल्म का प्रसिद्ध संवाद चरितार्थ होते हुए दिखाई देता है, जिसमें एक मुस्लिम अधिकारी दुसरे मुसलमान युवक से कहता है कि 'ये जो नफ़रत मुसलमानों के खिलाफ़ दुनिया के किसी हिस्से में पनप रही रही है, या दुसरे मुल्कों में पनप रही है, इसको इज्जत में बदलने का काम एक मुसलमान को ही करना होगा |' दानिश जावेद यह नहीं चाहते थे कि मुस्लिम समाज के युवकों को धर्म/मज़हब, स्वर्ग, सवाब आदि का लालच देकर उन्हें बरगलाया जाए और समाज में दूसरा कोई शाहिद मोहम्मद न जन्म ले | जब यह ज्ञात हो जाता है कि शाहिद इस बम ब्लास्ट के मुख्य सरगनाओं में से एक है, तब शांति से जीवन व्यतीत कर रहे परिवार के मध्य एकदम खलबली मच जाती है, और साथ-ही-साथ आस-पड़ोस के लोग भी उनके परिवारवालों को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं | समाज एवं आस-पड़ोसियों द्वारा यह प्रचारित किया जाता है कि मुराद अली मोहम्मद का घर आतंकवाद का अड्डा है, और इसे पुष्टि प्रदान करने का कार्य कोर्ट में संतोष आनंद (आशुतोष राना) द्वारा किया जाता है | इस फ़िल्म का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि शाहिद मोहम्मद के मृत शरीर को घरवालों द्वारा नकारते हुए कहा जाता है कि "ये हमारे घर का बच्चा नहीं है | आपको जो करना है इसके साथ कीजिए | हमें नहीं चाहिए |"[1] शाहिद जैसे अनेक मुस्लिम युवकों का ब्रेनवाश आज भी किया जाता है, जिनका प्रयोग आतंकवादी संगठनाओं द्वारा देश एवं समाज में असंतोष को जन्म देना होता है | शाहिद मोहम्मद के साथ पुलिस एवं परिवारों ने ठीक ही किया है | लेकिन जब निर्दोष परिवालों को दोषी मनाकर उनपर अनेक मनगढ़ंत आरोप लगाये जाते हैं, उनके विरुद्ध लोक में प्रचलित अनेक भ्रांत धारणाओं का प्रयोग किया जाता है | इस फ़िल्म में मोड़ एवं दिलचस्पी तब आती है, जब सम्पूर्ण परिवार को इस साजिश का हिस्सा मनाकर कोर्ट में दाखिल कर दिया जाता है, और इस कोर्ट में इन्हें यह साबित करने के लिये कहा जाता है कि उनके परिवारवालों का इस बम ब्लास्ट में किसी प्रकार का कोई हाथ नहीं है | अनेक आरोप एवं प्रत्यारोपों के बावजूद संतोष आनंद द्वारा यह कहता है कि "हम जिस सिचुएशन से डील कर रहे हैं ना, वह है आतंकवाद का बिजनेस | इनके समाज में बच्चे बहुत ज्यादा होते हैं |"[2] इस प्रकार से आतंकवाद का लेबल प्रथम बार वकील संतोष आनंद द्वारा लगाया जाता है, तभी जज हरीश मधोक संतोष आनंद को धर्म पर आक्षेप करने के मामले में टोकते हुए दूसरी वार्निंग देते है | इस कोर्ट में संतोष आनंद पूर्ण कोशिश करते हैं कि अली मोहम्मद का सम्पूर्ण परिवार 'आतंकवादी' हैं, इसी कारण वे इस केस को कभी धर्म, कुरुआन एवं अज्ञान की ओर मोड़ते हुए हिन्दू धर्म के प्रतीकों की और दर्शकों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहते है कि "हमारे ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तो कोई हैसियत ही नहीं है योर ऑनर | उन्हें भगवान ही नहीं माना जाता |"[3] मुस्लिम समाज हो या कोई ओर समाज आच्छे और बुरे लोग प्रत्येक समाज में दिखाई देते है, किसी परिवार का एक युवक बुरे रास्ते को अपनाता है और किसी देश विरोधी घटना को अंजाम देता है, तब सम्पूर्ण परिवार एवं समाज को दोषी नहीं माना जा सकता | इस फ़िल्म में संतोष आनंद द्वारा पूर्ण कोशिश यह की जाती है कि "जज साहब मैं अदालत से थोडा वक्त चाहूँगा ये सिद्ध करने के लिए कि सिर्फ अभियुक्त ही नहीं बल्कि इनका पूरा परिवार इस आतंकवादी साजिश का हिस्सा है |"[4] कोर्ट में चल रहे मुकदमें का कोई फैसला भी नहीं आता है लेकिन आस-पड़ोस वालों को यकीन हो जाता है कि मुराद अली मोहम्मद का घर आतंकवाद का अड्डा है, इसी कारण कुछ लोगों द्वारा उनके घर के दीवार पर 'टेररिस्ट' और 'गो टू पाकिस्तान' लिख दिया जाता है | अतः हिंदी सिनेमा के इतिहास में ऐसे अनेक फ़िल्में हैं जिसमें मुस्लिम समाज के नायक को 'गद्दार', 'धोकेबाज', 'आतंकवादी' और पाकिस्तानी हितैषी आदि रूप में चित्रित किया जाता है |

'मुल्क' फ़िल्म केवल एक फ़िल्म नहीं है बल्कि इस फ़िल्म के माध्यम से आतंकवाद और धर्म को कैसे जोड़कर देखा जाता है, इसका यथार्थ चित्रण हुआ है | जब अली मोहम्मद को मुस्लिम समाज के युवकों द्वारा कहा जाता है कि "भाईजान सारी कौम को बदनाम किया जा रहा है | आप जाके देखें सोशल मीडिया, फेसबुक वैगरह पर | हम साथ मिलके खड़े नहीं होंगे तो जीना मुश्किल हो जाएगा इस मुल्क में |"[5] अत्यंत संवेदनशील प्रसंग में भी समाज के ठेकेदार अपने हित

के लिये झूठा स्वांग रचने वाले हमें प्रत्येक जगह मिल जायेगें, उनके दृष्टि में शाहिद मोहम्मद की मृत्यु शहादत है लेकिन अली मोहम्मद के दृष्टि में वह मानव जाति को अत्यंत शर्मसार करने वाला कार्य था | जब लोगों द्वारा कहा जाता है कि आपके घर की दीवारों पर पाकिस्तानी लिखा है तब अली मोहम्मद कहते है कि "पाकिस्तानी ही लिखेंगे ना, अगर कुछ घरों में आज भी पाकिस्तान के जीतने पर पटाखे बजाए जाएँगें |"[6] अली मोहम्मद के सम्पूर्ण परिवारवालों पर आतंकवाद का लेबल लगाया गया, संतोष आनंद द्वारा कहा जाता है कि अली मोहम्मद का परिवार बच्चों से आतंकवाद का धंधा करवाता है, और उनपर देशद्रोही के आरोप लगाये जाते हैं और उन्हें उनके कोर्ट में अपनी देशभक्ति साबित करनी है | कोर्ट में अली मोहम्मद कहते है जो इस फ़िल्म की मूल संवेदना है "मुसलमान होने के फ़ायदे भी हुए हैं इस मुल्क में और कभी-कभी शक की नज़र से भी देखा गया है | पर दफ्न उसी कब्रिस्तान में होना है जो घर से दो सौ मीटर दूर है | पब्लिक प्रासीक्यूटर साहब ने कहा कि वो मुसलमानों का सम्मान करते हैं और उनका स्वागत करते हैं | मेरे घर में मेरा स्वागत करने का हक़ उन्हें किसने दिया | ये मेरा भी उतना ही घर है जितना कि आपका | और अगर आपको शक है मेरी वफ़ादारी पर तो जाइए आप पता कीजिए कि क्यों है शक आपको?... और अगर आप मेरी दाढ़ी और ओसामा बिन लादेन की दाढ़ी में फर्क नहीं कर पा रहे हैं तो भी मुझे हक़ है मेरी सुन्नत निभाने का |"[7] आमतौर पर आतंकवाद के पर्याय के रूप में मुसलमानों के चेहरे को आगे रखा जाता है, जिसका चेहरा डरवाना और आँखों में गाढ़ा शूरमा लगाये, विकृत हंसी हँसाने वाला चेहरा हमें दिखाई देता है | 'मुल्क' फिल्म में 'आतंकवाद' शब्द को इस प्रकार से परिभाषित किया गया है "सामाजिक या राजनीतिक उद्देश्य के लिए हिंसा का प्रयोग, विशेषकर आम जनता के विरुद्ध |"[8] इस परिभाषा में न ही किसी धर्म का उल्लेख किया गया है न व्यक्ति विशेष का | तब आरती जोर देखर कहती है कि 'क्या अनटचयेबिलिटी टेररिज्म है? क्या इनोसेंट आदिवासियों की हत्या टेररिज्म है? ऊँची जाति के लोगों द्वारा नीची जाति के लोगों पर अत्याचार, वो टेरेरिज्म है?' यह फ़िल्म अपने-आप में कई मायनों में महत्वपूर्ण है क्योंकि इस फ़िल्म के माध्यम से दर्शकों को यह ज्ञात हो जायेगा कि मुसलमान को आज भी संदेह/शक की दृष्टी से दृष्टि से देखा जाता है और आज भी उन्हें समय-समय पर अपनी देशभक्ति साबित करनी पड़ती है |

संतोष आनंद द्वारा कोर्ट में एक शेर पढ़ा जाता है- हम उन्हें अपना बनाएँ किस तरह,

वो हमें अपना समझते ही नहीं | इस शेर को आरती मोहम्मद (तपसी पन्नू) इस तरह से कोर्ट को समझाती है- हम और वो | अस एंड देम | माय लार्ड ये केस शाहिद, या बिलाल या अली मोहम्मद के बारे में तो है ही नहीं | ट्रेजिकल ये केस है 'हम और वो' के बारे में | ...एक मुल्क काग़ज़ पर नक्शों की लकीरों से नहीं बांटता सर, मुल्क बांटता है दिमाग में, रंग से, भाषा से, धर्म से और जात से | ...बदर मंजिल 1927 में बना हुआ वो घर है जिसमें वो परिवार रहता है जिसने 1947 ई. में मजहब और मुल्क में से मुल्क को चुना था | वो मुल्क, जिसमें ढेढ़ सौ भाषाएँ बोली जाती हैं, दसियों धर्म माने जाते हैं, उस मुल्क में 'हम और वो' की नज़र से जस्टिस को कैसे देखा जा सकता है आई रियली डोंट अंडरस्टैंड ...अली मोहम्मद, बिलाल और आयत को शाहिद और राशिद पर नज़र रखनी होगी | तभी ये मुल्क दुनिया का सबसे बेहतरीन मुल्क बनेगा | 'हम और वो' मिलके इस मुल्क को थोड़ी न बनाते हैं, 'हम' इस मुल्क को बनाते हैं |' शाहिद की मौत का जिम्मेदार वह खुद था, लेकिन बिलाल की मौत का जिम्मेदार कौन है? उसके इलाज़ के लिये आए पैसों को जिहादी की फ़ीस मान ली गई थी | शुरूआती दौर में ऐसा लगता है कि फ़िल्म अत्यंत संवेदनशील है लेकिन अंत में जज हरीश मधोक का फैसला अपने-आप में मुसलमान युवकों एवं अन्य समुदाय के नव-जवानों के लिए एक सन्देश की तरह लगता है | वे अली मोहम्मद से कहते है कि "पर संभालिए अपने लड़कों को | किससे मिलते हैं? क्या देखते हैं? बूस्टर एंटीना... क्या लगाते हैं...संभालिए | इस्लाम के एजेंट नहीं हैं आतंकवाद पर अपने बिजनेस और पॉलिटिक्स के लिये ये इस्लाम का मिसयूज़ कर रहे हैं | इस बात को एक्नोलेज कर लें आप तो इससे बचने का रास्ता भी निकल आएगा |"[9] अतः भारतीय संविधान की सुन्दरता ही उसका 'धर्मनिरपेक्ष' रवैया रहा है | संविधान के समक्ष भारत का प्रत्येक नागरिक सामान है अतः अंत में मुराद

अली मोहम्मद के परिवारवालों पर लगाये गए सारे इल्जाम कोर्ट ख़ारिज करते हुए उन्हें बरी किया जाता है |

समकालीन समय में समाज के अंतर्गत मीडिया द्वारा हिन्दू-मुसलमान के अलगाव पर अधिक जोर दिया जा रहा है | रोजमर्रा के जीवन में मुस्लिम समाज के व्यक्तियों पर आतंकवाद का लेबल लगाया जाता रहा है | देश के किसी कोने में ब्लास्ट होता है, तब दुसरे कोने के मुसलमान को संदेह एवं नफ़रत की दृष्टि से देखा जाता है | अतः कहा जा सकता है कि मुसलमान के विरुद्ध भारत में जितने भी रूढ़ धारणाएँ थी, उनका पर्दापाश इस फ़िल्म में किया गया है | किसी परिवार का कोई सदस्य जब देश-विरोधी गतविधियों में भागीदारी लेता है तब उस परिवार के अन्य सदस्यों को किन-किन समस्याओं का सामान करना पड़ता है, इसका यथार्थ चित्रण इस फ़िल्म के माध्यम से किया गया है |

(ऋषि कपूर एवं इरफ़ान खान को समर्पित)

संदर्भ सूची-

1. मुल्क, अनुभव सिन्हा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, पृ,सं, 79
2. वही, पृ.सं. 97
3. वही, पृ.सं. 99
4. वही, पृ.सं. 102
5. वही, पृ,सं. 117
6. वही, पृ.सं. 117
7. वही, पृ.सं. 142
8. वही, पृ.सं. 144
9. वही, पृ.सं. 152

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com